Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 13

लोक प्रशासन एवं प्रबंधन, खेल एवं योग, व्यवहार एवं विधि

SIERRA INNOVATIONS

RAS

लोक प्रशासन एवं प्रबंधन, खेल एवं योग, व्यवहार एवं विधि

क्र.सं.	अध्याय नाम	पृष्ठ सं.
	लोक प्रशासन एवं प्रबंधन	
1.	प्रशासन और प्रबंधन	1
2.	प्रशासन की प्रमुख अवधारणाएँ	36
3.	संगठन के सिद्धांत	46
4.	प्रबंधन, निगमित शासन और सामाजिक उत्तरदायित्व	54
5.	नवीन लोक प्रबंधन (NPM) और परिवर्तन प्रबंधन	69
6.	सिविल सेवा में अभिवृत्ति और मूल्य	80
7.	प्रशासन पर नियंत्रण	93
8.	राजस्थान में प्रशासनिक व्यवस्था और संस्कृति	104
9.	जिला प्रशासन	122
10.	विकास प्रशासन	131
11.	राजस्थान के प्रमुख संस्थान	136
	खेल एवं योग	
12.	भारत एवं राजस्थान राज्य की खेल नीति	153
13.	भारतीय खेल प्राधिकरण एवं राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद्	158
14.	राष्ट्रीय एवं राज्य खेल पुरस्कार	164
15.	सकारात्मक जीवन पद्धति – योग	167
16.	भारत के विख्यात खेल व्यक्तित्व	174

17.	प्राथमिक उपचार एवं पुनर्वास	181
18.	भारतीय खिलाड़ियों की ओलम्पिक, एशियाई खेल, कॉमनवेल्थ एवं पैराओलम्पिक खेल में भागीदारी	183
व्यवहार		
19.	बुद्धिमत्ता	187
20.	व्यक्तित्व	198
21.	अधिगम एवं अभिप्रेरणा	207
22.	तनाव और प्रबंधन	227
विधि		
23.	विधि की अवधारणा	238
24.	वर्तमान विधिक मुद्दे	250
25.	स्त्रियों एवं बालकों के विरूद्ध अपराध	263
26.	राजस्थान में महत्त्वपूर्ण भूमि विधियाँ	279
27.	माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007	290

1 CHAPTER प्रशासन और प्रबंधन

प्रशासन का अर्थ

1. 'प्रशासन' लैटिन शब्द 'administrate' से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "लोगों की देखभाल करना या उनके कार्यों का प्रबंधन करना"।
2. साधारण भाषा में, 'प्रशासन' का अर्थ है "कामकाज का प्रबंधन" चाहे वह सार्वजनिक हों या निजी।
3. प्रशासन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सभी सामूहिक प्रयास शामिल होते हैं, चाहे वह सार्वजनिक हो या निजी, नागरिक हो या सैन्य, बड़े पैमाने पर हों या छोटे। इसलिए यह सार्वभौमिक प्रकृति का होता है।
4. प्रशासन का मतलब है, लोगों और संसाधनों को संगठित करना और उनका उपयोग करना, ताकि किसी उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।
5. यह उन लोगों के समूह को दर्शाता है जो किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए समन्वय और सहयोग करते हैं।
6. प्रशासन वह शक्ति है जो किसी संगठन के उद्देश्य और प्रबंधन के लिए नीति का निर्धारण करती है और उस नीति के तहत संगठन का संचालन सुनिश्चित करती है।
7. एक संगठन वह संयोजन है जिसमें मानव संसाधन, सामग्री, उपकरण, कार्यस्थल और अन्य संसाधन एक साथ लाए जाते हैं ताकि किसी विशेष उद्देश्य को प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सके।
8. प्रबंधन वह है जो संगठन का नेतृत्व, मार्गदर्शन और निर्देशन प्रदान करता है, ताकि पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।
9. इस प्रकार, प्रशासन एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें प्रबंधन और संगठन दोनों शामिल होते हैं।
10. लोक प्रशासन राजनीतिक प्रणाली का हिस्सा होता है, जो राजनीतिक निर्णयों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्य करता है।

परिभाषाएँ

- एल.डी. व्हाइट के अनुसार, "प्रशासन कला का प्रयोग कई व्यक्तियों का निर्देशन, समन्वय और नियंत्रण करने के लिए होता है, ताकि किसी उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।"
- फेलिक्स ए. निग्रो के अनुसार लोक प्रशासन:
  - ✓ एक सार्वजनिक वातावरण में सामूहिक प्रयास है।
  - ✓ यह सरकार की तीनों शाखाओं - कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को शामिल करता है।
  - ✓ यह सार्वजनिक नीति तैयार करने और उसे लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - ✓ यह विभिन्न निजी समूहों से भी जुड़ा हुआ है और लोगों को सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करता है।
- लूथर गुलिक: "लोक प्रशासन, प्रशासन विज्ञान का वह हिस्सा है, जो सरकार से संबंधित है और मुख्य रूप से कार्यपालिका शाखा पर केंद्रित है, जहां सरकार के कार्य किए जाते है।"
- ई.एन. ग्लैडेन: "प्रशासन एक लंबा और थोड़ा प्रभावशाली शब्द है, लेकिन इसका एक साधारण अर्थ है, लोगों की देखभाल करना, उनके कार्यों को प्रबंधित करना, और इसे एक उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई के रूप में करना।"

- साइमन: “लोक प्रशासन का जनसामान्य में अर्थ है, राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारों की कार्यकारी शाखाओं की गतिविधियाँ।”
- वुडरो विल्सन: “यह कानून का एक व्यवस्थित दृष्टिकोण है।”
- विलोबी ने प्रशासन को 'चौथी शाखा' अर्थात 'प्रशासक' का दर्जा दिया।
- विस्तृत अर्थ में लोक प्रशासन में सरकार की तीनों शाखाएँ- कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका शामिल हैं।

- संकुचित अर्थ में यह केवल कार्यपालिका शाखा तक सीमित होता है।

लोक प्रशासन की प्रकृति

लोक प्रशासन की प्रकृति के संदर्भ में भी दो अलग-अलग दृष्टिकोण हैं-

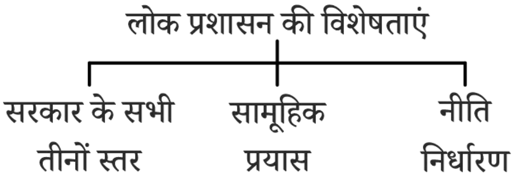

एकीकृत दृष्टिकोण

- इस दृष्टिकोण के अनुसार, लोक प्रशासन सभी गतिविधियों को शामिल करता है, चाहे वह लिपिकीय हो, या प्रबंधकीय कार्य हो।
  - ✓ अर्थात, एकीकृत दृष्टिकोण के अंतर्गत प्रशासन सभी कार्यों का योग है, चाहे वे लिपिकीय, प्रबंधकीय या अन्य मानवीय कार्य हों।
- सरल शब्दों में, चपरासी से लेकर कार्यकारी अधिकारियों तक, सरकार के सभी अधिकारियों द्वारा किए गए कार्य लोक प्रशासन का हिस्सा होते हैं।
- इस दृष्टिकोण के मुख्य समर्थक एल.डी. व्हाइट, वुडरो विल्सन और मार्शल ई. डिमॉक हैं।
- यह दृष्टिकोण शीर्ष से निम्नतम तक सभी लोगों और उनकी गतिविधियों को प्रशासन का हिस्सा मानता है।

प्रबंधकीय दृष्टिकोण

- इस दृष्टिकोण के अनुसार, लोक प्रशासन केवल प्रशासन की प्रबंधकीय गतिविधियों को संदर्भित करता है।
  - ✓ इसका अर्थ है कि प्रशासन केवल उन लोगों के कार्यों तक सीमित है, जो प्रबंधकीय कार्य कर रहे हैं।
- इस दृष्टिकोण में, लिपिकीय, गैर-तकनीकि और तकनीकी विभागों की गतिविधियों को लोक प्रशासन की सीमा से बाहर रखा जाता है।
- इसके मुख्य समर्थक लूथर गुलिक, हेनरी फेयोल, और हर्बर्ट साइमन हैं।
- यह दृष्टिकोण केवल शीर्ष स्तर के अधिकारियों की गतिविधियों को लोक प्रशासन मानता है।
- भारत जैसे विकासशील देशों में लोक प्रशासन एकीकृत प्रकृति का होता है, क्योंकि यहां का 90% काम लिपिक स्तर पर होता है और इसे शीर्ष स्तर पर स्वीकृति मिलती है। इस कारण भारत में लिपिक(Clerk) को प्रशासन की रीढ़ कहा जाता है।

लोक प्रशासन का क्षेत्र

तीन दृष्टिकोण

संकुचित दृष्टिकोण या POSDCORB

1. Planning - नियोजन
2. Organisation - संगठन बनाना
3. Staffing - कार्मिक नियोजन
4. Directing - निर्देशन करना
5. Co-ordination - समन्वय करना
6. Reporting - रिपोर्ट बनाना
7. Budgeting - बजट बनाना

प्रतिपादक - लूथर गुलिक

दृष्टिकोण - तकनीक पर आधारित

व्यापक दृष्टिकोण

1. यह सरकार की सभी तीनों शाखाओं (कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका) को सम्मिलित करता है।
2. इसे सहकारी समूह की तरह माना जाता है।
3. यह राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा है।

प्रतिपादक - वुडरो विल्सन ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया।

दृष्टिकोण - इसे विषय पर आधारित-केंद्रित

प्रचलित दृष्टिकोण

लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र का को दो भागों में विभाजन जित

प्रशासनिक सिद्धांत

1. संगठनात्मक सिद्धांत
2. व्यवहार
3. सार्वजनिक व्यक्तिगत प्रशासन

अनुप्रयुक्त प्रशासनिक

1. राजनीतिक कार्य
2. विधायी
3. वित्तीय
4. रक्षा
5. शैक्षिक
6. सामाजिक कल्याण
7. आर्थिक
8. विदेशी प्रशासन
9. स्थानीय प्रशासन

- ➢ पारंपरिक विचारकों ने लोक प्रशासन के क्षेत्र को केवल सरकार की एक शाखा (कार्यपालिका) तक सीमित रखते हैं।
  - ✓ लेकिन आधुनिक प्रशासनिक विचारकों ने लोक प्रशासन के क्षेत्र को सभी शाखाओं (कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका) तक विस्तारित किया है।
- ➢ लोक प्रशासन के क्षेत्र के दो दृष्टिकोण-
- ➢ POSDCORB दृष्टिकोण
  - ✓ यह दृष्टिकोण प्रसिद्ध प्रशासनिक विद्वान लूथर गुलिक द्वारा दिया गया था।
  - ✓ उनके अनुसार, प्रत्येक प्रशासन में सात प्रमुख तत्व होने चाहिए।
    - ▪ इन सात तत्वों को POSDCORB के रूप में संक्षेप में बताया गया है।
  - ✓ POSDCORB का प्रत्येक अक्षर प्रशासन के एक तत्व को दर्शाता है:
    - ▪ P - Planning (नियोजन):
      - ☞ प्रशासनिक प्रबंधकों का यह कार्य है कि वे यह योजना बनाएं कि क्या करना है और इसे कैसे करना है, ताकि संगठन के उद्देश्य पूरे हो सकें।
    - ▪ O - Organizing (संगठन बनाना):
      - ☞ प्रत्येक संगठन को व्यवस्थित होना चाहिए।
      - ☞ इसके अंतर्गत प्राधिकरण की औपचारिक संरचना बनाई जाए, और काम के उप-विभाजन को परिभाषित व समन्वित किया जाए।
    - ▪ S - Staffing (कार्मिक नियोजन):
      - ☞ इसमें कर्मचारियों को नियुक्त करना, प्रशिक्षित करना और उन्हें अनुकूल कार्य परिस्थितियाँ प्रदान करना शामिल है।
    - ▪ D - Directing (निर्देशन):
      - ☞ इसमें निर्णय लेना, आदेश देना और संगठन को नेतृत्व प्रदान करना शामिल है।

- CO - Coordinating (समन्वय करना):
    - ☞ प्रबंधक का एक महत्वपूर्ण कार्य है सहकर्मियों और अधिकारियों के बीच समन्वय स्थापित करना।
    - ☞ इसमें रिपोर्ट, शोध और निरीक्षण के माध्यम से कार्यों को समन्वित करना आसान हो जाता है।
- R - Reporting (रिपोर्ट बनाना):
    - ☞ कार्यों की जानकारी को शीर्ष अधिकारियों तक पहुंचाना।
- B - Budgeting (बजट बनाना):
    - ☞ इसमें वित्तीय योजना, लेखांकन और नियंत्रण से संबंधित सभी कार्य शामिल हैं।

➢ आलोचना:

1. यह दृष्टिकोण तकनीकि-केंद्रित है और विषय ज्ञान की उपेक्षाकरता है।
2. यह दृष्टिकोण प्रशासन के व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा नहीं करता।
3. इसके अनुसार प्रशासन की समस्याएं सभी संगठनों में समान होती हैं, चाहे उनका कार्य क्षेत्र कुछ भी हो।

➢ विषय वस्तु दृष्टिकोण (Subject Matter View)

- ✓ यह दृष्टिकोण लोक प्रशासन को उसके विषयवस्तु से परिभाषित करता है।
- ✓ एम.ई. डिमॉक के अनुसार, प्रशासन का सम्बन्ध "सरकार के 'क्या' और 'कैसे' से है।"
    - 'क्या'का तात्पर्य है किसी क्षेत्र का विषय ज्ञान, जो प्रशासक को अपना कार्य करने में सक्षम बनाता है।
    - 'कैसे का तात्पर्य है प्रबंधन की तकनीक और सिद्धांत, जिसके अनुसार सहकारी कार्यक्रम सफल बनाया जाता है।
    - इन दोनों का संतुलन ही प्रशासन है।
- ✓ विषय के रूप में लोक प्रशासन में कई शाखाएँ शामिल हैं, जैसे:
    - संगठनात्मक, प्रशासनिक सिद्धांत और व्यवहार
    - लोक कार्मिक प्रशासन
    - नवीन लोक प्रशासन
    - तुलनात्मक लोक प्रशासन
    - विकास प्रशासन
    - लोक नीति
    - शासन
    - सुशासन
    - ई-गवर्नेंस
    - सामाजिक कल्याण प्रशासन
    - निगमित शासन
    - नवीन लोक प्रबन्धन
- ✓ यह विषय-केंद्रित है जो इस बात पर बल देता है कि प्रशासन का वास्तविक मूल विभिन्न सेवाओं में निहित है।
- ✓ जैसे स्वास्थ्य, रक्षा, सामाजिक सुरक्षा जैसी सेवाओं के लिए विशेष तकनीकों की आवश्यकता होती है (उदाहरण: पुलिस प्रशासन)।
- ✓ इस प्रकार, लोक प्रशासन के दोनों दृष्टिकोण (POSDCORB और विषय वस्तु) एक-दूसरे के पूरक हैं न कि परस्पर विरोधी ।

- ✓ लुइस मेरियम के अनुसार, "लोक प्रशासन एक कैंची के दो फलकों के समान है, जिसमें - एक क्षेत्र का ज्ञान (POSDCORB) और दूसरा विषय-वस्तु का ज्ञान है।"
- ✓ लोक प्रशासन में पाँच प्रमुख शाखाएँ हैं:
  1. संगठनात्मक सिद्धांत और व्यवहार
  2. लोक कार्मिक प्रशासन
  3. लोक वित्तीय प्रशासन
  4. लोक नीति विश्लेषण
  5. तुलनात्मक और विकास प्रशासन

लोक प्रशासन का महत्व

- ➢ लोक प्रशासन, समाज में एक स्थिरकारी शक्ति के रूप में कार्य करता है क्योंकि यह सरकार परिवर्तन के बाद भी निरंतरता बनाए रखता है।
- ➢ यह किसी भी सरकार का आधार है, चाहे वह राजतंत्र हो या लोकतंत्र।
- ➢ यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है-
  - ✓ सेवाएँ प्रदान करने के उपकरण के रूप में
    - ■ शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, सामाजिक सुरक्षा आदि सेवाएँ नागरिकों को प्रदान करता है।
    - ■ लोक प्रशासन के बिना लोक सेवाएँ जनता तक नहीं पहुँच सकतीं।
  - ✓ सरकार के कानूनों और नीतियों को लागू करने के उपकरण के रूप में
    - ■ सरकार जनता के हित में कानून और नीतियाँ बनाती है।
    - ■ लोक प्रशासन इन्हें वास्तविकता में बदलने या वयवहार में लागू करता है।
  - ✓ विकास और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में
    - ■ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कई राष्ट्र स्वतंत्र हुए।
    - ■ स्वतंत्रता के बाद, लोक प्रशासन ने उनके सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
    - ■ जैसे- भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, रोजगार योजना, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, ग्रामीण विद्युतीकरण, सड़क निर्माण आदि लागू करने में इसकी भूमिका उल्लेखनीय रही।
  - ✓ सतत विकास के उपकरण के रूप में
    - ■ इसका तात्पर्य है कि आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण की रक्षा करना।
    - ■ पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रशासक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
    - ■ इसके तहत पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान लोक प्रशासन के माध्यम से किया जाता है।
  - ✓ राष्ट्रीय एकता के उपकरण के रूप में
    - ■ उदाहरण के लिए, भारत में विभाजन के बाद राष्ट्रीय एकता के संकट को दूर करने में लोक प्रशासन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
      - ☞ इसने शरणार्थियों के पुनर्वास में मदद की और रियासतों को भारतीय क्षेत्र में एकीकृत किया।
  - ✓ सामुदायिक विकास के उपकरण के रूप में
    - ■ हर देश में विभिन्न जातियाँ और धर्म होते हैं।
      - ☞ इसलिए, सभी के लिए एक समान नीति प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो सकती।

- लोक प्रशासन समाज में प्रत्येक समुदाय के बारे में तटस्थ जानकारी एकत्र करता है और उस जानकारी के आधार पर सरकार नीतियाँ बनाती है। तथा लोक प्रशासन उन नीतियों को विशेष समुदाय के सन्दर्भ में लागू करता है।
  - ☞ इस प्रकार, लोक प्रशासन सामुदायिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

✓ सार्वजनिक सुरक्षा के उपकरण के रूप में

- लोक प्रशासन नागरिकों को सुरक्षित रखने के लिए कई सेवाएं प्रदान करता है, जैसे- पुलिस, अग्निशमन और चिकित्सा।

✓ स्वतंत्र अकादमिक विषय के रूप में

- समय के साथ, लोगों के लिए लोक प्रशासन का महत्व बढ़ता जा रहा है।
- अब लोक प्रशासन सरकार की प्रशासनिक प्रणाली को समझने और इसके विकास के लिए आवश्यक हो गया है।
  - ☞ इसलिए, बेहतर समझ और विकास के लिए, लोक प्रशासन एक स्वतंत्र अकादमिक विषय के रूप में विकसित हुआ है।

विकसित और विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका

विकसित समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका

- लोक प्रशासन विभिन्न देशों के विकास के लिए नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह जनता को कई सेवाएँ प्रदान करता है। और उनके हित में कार्य करता है।
- लोक प्रशासन समाज के सदस्यों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा सुनिश्चित करता है और उचित कानून और व्यवस्था बनाए रखता है।
- लोक प्रशासन शिक्षा, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक आवश्यकताओं, बीमा, आवास, बेरोजगारी भत्ता, संचार और परिवहन जैसी सेवाएं प्रदान करता है।
- यह उद्योगों का संचालन और ऋण प्रदान करके देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान देता है।
- अधिकांश विकसित देशों को, विशेष रूप से यूरोप में, प्रशासनिक राज्य कहा जाता है, जहां नौकरशाही विशिष्ट कार्य करती है।
- इन देशों में लोक प्रशासन कानून-व्यवस्था लागू करने, राजस्व संग्रह, और राष्ट्रीय रक्षा जैसे विनियामक कार्य करता है।
- चुनौतियां:
  - ✓ विभिन्न सेवाएं प्रदान करने वाली एजेंसियों और नियामक निकायों के बीच समन्वय की कमी।
  - ✓ नौकरशाही के विशेषीकृत क्षेत्रों में राजनेताओं का प्रभुत्व।
  - ✓ विकसित देशों में आर्थिक मंदी के कारण सरकारी सेवाओं पर अत्यधिक दबाव।

विकासशील राष्ट्रों की सामान्य विशेषताएं

- आकार और आय स्तर: संयुक्त राष्ट्र के 141 विकासशील स्थायी सदस्य देशों में से 72 की जनसंख्या 1.5 करोड़ से कम है और 51 की जनसंख्या 50 लाख से भी कम है।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: इन देशों की आर्थिक संरचना और शैक्षिक तथा सामाजिक संस्थाएं उन पर शासन करने वाले पूर्व उपनिवेशवादी सत्ताओं के प्रारूप पर आधारित हैं।
- औद्योगिक संरचना: अधिकांश विकासशील देश आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कृषि आधारित हैं।
- निम्न जीवन स्तर: विकासशील देशों में जीवन स्तर निम्न होता है।
  - ✓ यह निम्न स्तर कम मुख्य रूप से आय, अपर्याप्त आवास, खराब स्वास्थ्य, शिक्षा की कमी या अनुपलब्धता, उच्च शिशु मृत्यु दर, कम जीवन और कार्य प्रत्याशा की संभावना जैसे गुणात्मक और मात्रात्मक रूप में दिखाई देता है।

विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका

- लोक प्रशासन ने_जनता की अपेक्षाओं को पूरा किया है-विकासशील देशों की सरकारों से उम्मीद की जाती है कि वे समाज के विभिन्न वर्गों जैसे महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों, गरीबों और कमजोर वर्गों को बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करें।
- प्रशासनिक व्यवस्था राजनीतिक नेतृत्व को लक्षित व्यक्तियों के कल्याण के लिए अच्छी नीतियाँ बनाने में मदद करती है और इन नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करती है ताकि अधिकतम परिणाम प्राप्त हो सके।
- लोक प्रशासन लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- सामाजिक आर्थिक विकास में भूमिका-
  - ✓ विकासशील देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं और इनमें बुनियादी ढाँचे, तकनीक, संसाधन और कुशल जनशक्ति की कमी हो सकती है। इसलिए, इन देशों की सरकारों पर लोगों के समग्र विकास की जिम्मेदारी होती है।
- विकासशील देशों में सीमित संसाधनों की उपलब्धता के कारण, ऐसी नीतियाँ निर्मित की जाती हैं जिनसे संसाधनों का समान रूप से वितरण हो सके।
  - ✓ विकास प्रयासों का समर्थन करने वाले पारंपरिक कार्यों का प्रभावी निष्पादन
    - सरकार का पारंपरिक कार्य कानून-व्यवस्था बनाए रखना है।
    - कानून-व्यवस्था के बिना समाज का विकास संभव नहीं है।
    - विकासशील देशों में कई वर्ग अपनी माँगों को लेकर कानून-व्यवस्था को बिगाड़ सकते हैं, जिससे विकास में बाधा उत्पन्न होती है। यहाँ सार्वजनिक प्रशासन दंगों जैसी गतिविधियों को रोकने में अहम भूमिका निभाता है।
  - ✓ राष्ट्रवाद की भावना विकसित करना:
    - राष्ट्रवाद की भावना किसी देश के विकास की कुंजी होती है। लेकिन जातीय और सांप्रदायिक विवादों, जाति-धर्म के टकरावों के कारण कई देशों में यह भावना कमजोर होती है।
    - प्रशासन राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है और समाज के विभिन्न वर्गों के विवाद सुलझाने का प्रयास करता है।
  - ✓ लोकतंत्र को जीवित रखने में मदद:
    - अधिकांश विकासशील देशों में लोकतंत्र उतना मजबूत नहीं है जितना होना चाहिए क्योंकि इन देशों के लोग लोकतांत्रिक प्रणाली का ज्यादा अनुभव नहीं रखते।
  - ✓ इसलिए, इन देशों में लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए प्रशासन का सहयोग आवश्यक है

समकालीन समाज में लोक प्रशासन की भूमिका

- शासन व्यवस्था का संरक्षण।
- सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का संस्थानीकरण।
- स्थिरता और व्यवस्था का रखरखाव।
- बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक सेवाओं का प्रबंधन।
- जनमत का निर्माण।
- रोजगार के अवसर प्रदान करना।

- महत्वपूर्ण विकास–
    1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास।
    2. कल्याणकारी राज्य।
    3. चौथी औद्योगिक क्रांति (IR 4.0) ।
    4. जनसंख्या विस्फोट।
    5. आपदा प्रबंधन में वृद्धि।

<u>लोक प्रशासन के बढ़ते महत्व के कारक:</u>

1. जनसंख्या वृद्धि।
2. आधुनिक युद्ध की प्रकृति ने मानव और भौतिक संसाधनों को जुटाने में लोक प्रशासन की ज़िम्मेदारियों में वृद्धि।
3. आर्थिक नियोजन को अपनाना।
4. कल्याणकारी राज्य का उदय।
5. औद्योगिक क्रांति ने असमानता बढ़ाई और वैज्ञानिक व तकनीकी विकास ने सरकार और प्रशासन की गतिविधियों के दायरे को व्यापक कर दिया।
6. प्राकृतिक आपदाओं, ई-गवर्नेंस, मानवाधिकारों में वृद्धि।

भारत में लोक प्रशासन का विकास

- भारतीय प्रशासन का विकासक्रम प्राचीन भारत में निहित है।
- प्रारंभिक काल से ही शासन कार्यों के निष्पादन में लोक प्रशासन में राजतंत्रीय प्रणाली का उपयोग किया जाता रहा है।
- भारतीय प्रशासनिक प्रणाली की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं जो प्राचीन काल से प्रचलित हैं:
    - ✓ गाँवों का प्राथमिक इकाई के रूप में महत्व।
    - ✓ केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के बीच समन्वय।
- प्राचीन काल में राज्यों का प्रशासन राजा के हाथों में केंद्रीकृत था।
- वैदिक काल में राजा को कई अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
    - ✓ राजा के साथ उसके मित्र और मुख्य अधिकारी होते थे।
    - ✓ इसका उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है।
- ऐसे प्रशासन का उल्लेख मनु स्मृति और शुक्र नीति में भी है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य कार्यालयों का पहला विस्तृत विवरण मिलता है।
- 1773 का वर्ष भारतीय प्रशासन के विकास में एक मील का पत्थर था।
    - ✓ 1773 से पूर्व देश में कोई केंद्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण नहीं था।
    - ✓ 1773 का अधिनियम प्रेसीडेंसी को गवर्नर-जनरल की परिषद की अनुमति के बिना युद्ध या संधि करने से रोकता था।
        - ▪ इससे ब्रिटिश संसद का ईस्ट इंडिया कंपनी के मामलों पर नियंत्रण स्थापित हुआ।
- 1784 के पिट्स इंडिया एक्ट ने निदेशक मंडल पर ब्रिटिश मंत्रिमंडल का प्रतिनिधित्व करने वाले नियंत्रण बोर्ड की स्थापना करके भारतीय मामलों को ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा।
- भारतीय प्रशासनिक ढाँचा मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन की देन है।

- भारतीय प्रशासन के विभिन्न संरचनात्मक और कार्यात्मक पहलू जैसे सचिवालय प्रणाली, अखिल भारतीय सेवाएँ, भर्ती, प्रशिक्षण, कार्यालय प्रक्रियाएँ, स्थानीय प्रशासन, जिला प्रशासन, बजट, लेखा परीक्षा, केंद्रीकरण की प्रवृत्ति, पुलिस प्रशासन, राजस्व प्रशासन, इत्यादि का आधार ब्रिटिश शासन से सम्बंधित है।
- भारत में ब्रिटिश शासन को दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है
  - ✓ 1858 तक कंपनी शासन
  - ✓ 1858-1947 तक क्राउन/ताज का शासन।
- 1858 का वर्ष एक महान घटना का वर्ष था, क्योंकि इस वर्ष भारत सरकार का प्रशासन ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश सरकार के हाथों में आ गया।
- 1858-1950 की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण चरण निम्नानुसार थे:
  - ✓ भारत सरकार अधिनियम 1858, भारतीय परिषद अधिनियम 1861, भारतीय परिषद अधिनियम 1892, भारतीय परिषद अधिनियम/मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909, भारत सरकार अधिनियम/मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 1919, भारत सरकार अधिनियम 1935, भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947, और भारतीय संविधान को अपनाना 1949।

लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में विकास

लोक प्रशासन का विकास 19वीं शताब्दी के अंत से वर्तमान समय तक निम्नलिखित 6 चरणों में हुआ है:

चरण 1: राजनीति-प्रशासन विभाजन (1887-1926)

- वुडरो विल्सन की पुस्तक "द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन" में पहली बारराजनीति और प्रशासन को अलग करने की मांगप्रस्तुत की गई।
- फ्रैंक गुडनॉ की पुस्तक "पॉलिटिक्स एंड एडमिनिस्ट्रेशन: ए स्टडी इन गवर्नमेंट" (1900) ने इस विचार को और मजबूती प्रदान की। गुडनॉ को "अमेरिकी लोक प्रशासन का बौद्धिक जनक" कहा जाता है।
- यह कहा गया कि राजनीतिक निर्णय लेने की जिम्मेदारी राजनीतिज्ञों की होती है, लेकिन इन निर्णयों को लागू करने के लिए उनके पास न तो आवश्यक अनुभव होता है और न ही विशेषज्ञता।
  - ✓ इसीलिए इन नीतियों को लागू करने के लिए कुशल और प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।
- केवल प्रशासन ही सरकारी नीतियों को कुशलता और स्थायित्व के साथ लागू कर सकता है।।
- इस चरण के विद्वानों ने लोक प्रशासन के "आधार" (Locus) पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।
  - ✓ लोक प्रशासन का मुख्य आधार सरकारी नौकरशाही को माना गया।
- विधायिका चर्चा के माध्यम से राज्य की इच्छाओं का निर्धारण करती है।, न्यायपालिका नीतियों के कार्यान्वयन से उत्पन्न समस्याओं का समाधान करती है, और प्रशासन इन नीतियों को राज्य के नेताओं की सहायता से लागू करता है।
  - ✓ इस प्रकार राजनीति और प्रशासन के बीच विभाजन स्पष्ट होता है। और इस चरण को राजनीति-प्रशासन द्वंद्व के रूप में चिह्नित किया जाता है।
- 20वीं शताब्दी की शुरुआत में लोक प्रशासन को अमेरिकी विश्वविद्यालयों में एक अलग विषय के रूप में मान्यता मिली।
- इस समय लोक प्रशासन के कर्मचारियों का लोक प्रशासन सिद्धांतकारों और शोधकर्ताओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था।
- वर्ष 1906 में न्यूयॉर्क ब्यूरो ऑफ म्युनिसिपल रिसर्च को स्थानीय सरकार के कार्य को सफल बनाने के लिए स्थापित किया गया। वर्ष 1911 में इस संस्था ने "ट्रेनिंग स्कूल फॉर पब्लिक सर्विस" नामक पहला लोक प्रशासन स्कूल स्थापित किया।

- वर्ष1926 सार्वजनिक प्रशासन के सैद्धांतिक विमर्श में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष एल.डी. व्हाइट की पुस्तक "इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" प्रकाशित हुई, जिसे लोक प्रशासन की पहली पाठ्यपुस्तक माना जाता है। यह पुस्तक राजनीति-प्रशासन विभाजन को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

चरण 2: प्रशासन के सिद्धांत (1927-1937)

- 1927 को लोक प्रशासन के विकास के दूसरे चरण की शुरुआत माना जाता है क्योंकि इसी वर्ष डब्ल्यू.एफ. विलॉबी की पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" प्रकाशित हुई।
- यह पुस्तक व्हाइट की पुस्तक के बाद लोक प्रशासन में दूसरी सबसे महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।
- इस चरण में लोक प्रशासन पर चर्चा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।
  - ✓ यह माना गया कि लोक प्रशासन में कुछ वैज्ञानिक सिद्धांत हैं जिनको उजागर और लागू किया जाना आवश्यक है।
- यदि इन सिद्धांतों को प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा उचित रूप से लागू किया जाए, तो कार्यकुशलता बढ़ाई जा सकती है और लोक प्रशासन को एक वैज्ञानिक विषय के रूप में विकसित किया जा सकता है।
- फ्रेडरिक विंसलो टेलर की पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ साइंटिफिक मैनेजमेंट" (1911) ने संगठन की दक्षता बढ़ाने के लिए चार सिद्धांतों का उल्लेख किया।
  - ✓ कार्य का सटीक वैज्ञानिक विकास।
  - ✓ कर्मचारियों का वैज्ञानिक चयन, प्रशिक्षण, और उन्नति।
  - ✓ कार्य के विज्ञान और कर्मचारियों के बीच समन्वय।
  - ✓ कार्य और उत्तरदायित्व का समान वितरण।
- टेलर के अलावा, गैंट (गैंट चार्ट), गिल्बर्ट (फ्लो प्रोसेस चार्ट), और एच. इमर्सन (The Twelve Principles of Efficiency) ने भी उद्योग में कौशल दोहराव के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करने पर बल दिया।
  - ✓ इन सभी विचारों को "वैज्ञानिक प्रबंधन अवधारणा" कहा जाता है।
- यह चरण लोक प्रशासन के इतिहास में "स्वर्ण युग" के रूप में जाना जाता है क्योंकि इस समय लोक प्रशासन का बौद्धिक प्रथाओं का विकास चरम पर था।
- इस चरण में कई प्रसिद्ध प्रशासनिक सिद्धांतकारों के लेखन ने लोक प्रशासन को एक नई दिशा दी।

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	वर्ष
हेनरी फेयोल	जनरल एंड इंडस्ट्रियल मैनेजमेंट	1916
मैरी पार्कर फोलेट	क्रिएटिव एक्सपीरियंस	1928
जेम्स डी. मूनी और एलन रीली	ऑनवर्ड इंडस्ट्री, प्रिंसिपल्स ऑफ ऑर्गनाइजेशन	1931, 1940
गुलिक और उर्विक	पेपर्स ऑन द साइंस ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन	1937

- द्वितीय चरण में प्रसिद्ध प्रशासनिक सिद्धांतकारों की रचनाएँ:
  - ✓ हेनरी फेयोल
    - ▪ इन्होंने प्रशासन को बेहतर परिणामों के लिए 14 सिद्धांत दिए।
    - ▪ ये हैं:
      - ☞ कार्य विभाजन
      - ☞ अधिकार और उत्तरदायित्व

- ☞ अनुशासन
- ☞ आदेश की एकरूपता
- ☞ निर्देश की एकरूपता
- ☞ व्यक्तिगत हित का सामान्य हित के अधीन होना
- ☞ पारिश्रमिक
- ☞ केंद्रीकरण
- ☞ श्रेणी शृंखला (पदसोपन)
- ☞ पदस्थापन या व्यवस्था
- ☞ समता
- ☞ कर्मियों के कार्यकाल की स्थिरता
- ☞ पहल
- ☞ सौहार्द्र एवं सहयोग की भावना

✓ गुलिक और उर्विक

- ▪ प्रशासन के सबसे सामान्य सिद्धांतों में से गुलिक और उर्विक का POSDCORB विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
- ▪ यह प्रशासन के 7 कार्यों को परिभाषित करता है:
  - ☞ P- नियोजन (Planning)
  - ☞ O- संगठन बनाना (Organizing)
  - ☞ S- कार्मिक नियोजन (Staffing)
  - ☞ D- निर्देशन (Directing)
  - ☞ CO- समन्वय (Coordinating)
  - ☞ R- रिपोर्टिंग (Reporting)
  - ☞ B- बजटिंग (Budgeting)

✓ जेम्स डी. मूनी और एलन रीली

- ▪ इन्होने प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि के लिए चार सिद्धांत प्रदान किये:
  - ☞ समन्वय
  - ☞ श्रेणी प्रक्रिया /सोपन प्रक्रिया
  - ☞ कार्यात्मक विभेदीकरण
  - ☞ लाइन और स्टाफ

चरण 3: चुनौतियों का युग (1938-1947)

- ➢ लोक प्रशासन के सिद्धांतों पर आधारित विकास के दृष्टिकोण को वर्ष 1936 में चेस्टर आई. बर्नार्ड की पुस्तक "द फंक्शन्स ऑफ द एग्जीक्यूटिव" के प्रकाशन से बौद्धिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- ➢ इस चरण में लोक प्रशासन के सैद्धांतिक अवधारणा को दो दृष्टिकोणों से चुनौती दी गई:
  - ✓ पहला, कुछ नए सिद्धांतकारों ने यह तर्क दिया कि राजनीति और सार्वजनिक प्रशासन के बीच विभाजन कभी संभव नहीं था।
  - ✓ दूसरा, 1940 के बाद प्रकाशित प्रशासनिक सिद्धांतों ने प्रशासन के सार्वभौमिक और अंतिम सिद्धांतों की संभावना पर सवाल उठाया।

- एफ.एम. मार्क्स द्वारा संपादित पुस्तक "एलिमेंट्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" के लेखकों ने राजनीति और लोक प्रशासन के बीच विभाजन की निरर्थकता पर बल दिया।
  - ✓ इन लेखकों ने यह भी बताया कि लोक प्रशासन को मूल्य-निरपेक्ष (value-neutral) नहीं माना जा सकता।
- एक नए समूह ने यह विचार प्रस्तुत किया कि वैज्ञानिक प्रबंधन प्रशासन का अंतिम समाधान नहीं है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय कारक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं।
  - ✓ इस समूह को "मानव संबंध अवधारणा" कहा जाता है।
- हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने शिकागो स्थित वेस्टर्न इलेक्ट्रिक कंपनी के हॉथॉर्न प्लांट पर किए गए शोध से प्रशासन और संगठन के सिद्धांतों में एक वैचारिक क्रांति की शुरुआत की।
  - ✓ एल्टन मेयो और एफ.जे. रोथलिसबर्गर ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि सिद्धांतों का नवाचार और उनका केवल क्रियान्वयन उत्पादन या उत्पादन विधियों में सुधार के लिए पर्याप्त नहीं है।
  - ✓ प्रबंधन में मानवीय तत्व भी महत्वपूर्ण हैं।
    - ▪ मानवीय तत्वों में कार्य वातावरण, निदेशक और कर्मचारियों की मंशा, संतोष आदि भी महत्वपूर्ण हैं।
- हर्बर्ट साइमन ने प्रशासन और प्रबंधन के क्षेत्र में वैज्ञानिक विचारों के अनुप्रयोग का स्वागत किया, लेकिन उन्होंने वैज्ञानिक प्रबंधन के पारंपरिक प्रस्तावकों द्वारा दिए गए सिद्धांतों को केवल कहावतों से अधिक कुछ नहीं माना।
  - ✓ उन्होंने वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांतों की अस्पष्टता और असंगति को उजागर करते हुए "तर्कसंगत निर्णय लेने का मॉडल" प्रस्तुत किया।
- रॉबर्ट डाल ने भी साइमन की तरह यह तर्क दिया कि उन्नत तरीकों या तकनीकों के आविष्कार और अनुप्रयोग के बजाय सामाजिक, ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, आर्थिक और अन्य पर्यावरणीय ताकतों को समझना अधिक महत्वपूर्ण है।
- उनका मानना था कि इन पर्यावरणीय ताकतों का प्रशासन के विकास पर विशेष प्रभाव पड़ता है।
- डाल ने यह भी तर्क दिया कि प्रशासन के वैज्ञानिक सिद्धांत (प्रशासन का पारंपरिक सिद्धांत)) में तीन समस्याएँ हैं।
  - ✓ प्रशासनिक सिद्धांत से मानदंड तत्वों का बहिष्कार।
  - ✓ वैज्ञानिक प्रशासनिक सिद्धांतों में मानवीय पक्ष की अनुपस्थिति।
- ये सिद्धांत केवल कुछ सीमित राष्ट्रीय और ऐतिहासिक उदाहरणों पर आधारित हैं।
  - ✓ इससे यह सिद्ध होता है कि पारंपरिक सिद्धांत वैज्ञानिक नहीं हैं।

चरण 4: पहचान का संकट (1948-1970)

- 1950 के दशक से लोक प्रशासन के विद्वानों ने राजनीति और लोक प्रशासन के विभाजन तथा लोक प्रशासन में सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग को त्याग दिया।
- इस समय के प्रशासनिक सिद्धांतकारों ने लोक प्रशासन और राजनीति के बीच संबंध को स्वीकार किया।
  - ✓ इसके परिणामस्वरूप लोक प्रशासन राजनीतिक विज्ञान पर निर्भर हो गया।
- इस स्थिति में यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि सार्वजनिक प्रशासन का चर्चा क्षेत्र क्या है।
  - ✓ इसलिए लोक प्रशासन के इस चरण को "पहचान का संकट"कहा जाता है।
- इस पहचान संकट को दूर करने के लिए, लोक प्रशासन को एक बहुविषयक क्षेत्र के रूप में देखा जाने लगा।
- इस चरण में लोक प्रशासन के क्षेत्र में कई उपविषय उभरे, जैसे:

उभरती अवधारणाएँ	योगदानकर्ता
नए मानव संबंध सिद्धांत	क्रिस आर्ग्यरिस, डगलस मैकग्रेगर, रेंसिस लिकर्ट, वॉरेन बेनिस
तुलनात्मक लोक प्रशासन	एफ.डब्ल्यू. रिग्स और अन्य
विकास प्रशासन	एडवर्ड वीडनर, एफ.डब्ल्यू. रिग्स
प्रशासनिक विकास	एफ.डब्ल्यू. रिग्स

चरण 5: लोक नीति दृष्टिकोण (1971-1990)

- लोक प्रशासन का एक हालिया विकास लोक नीति दृष्टिकोण की चर्चा है।
- यह बहुवादी व्याख्याओं, संचार सिद्धांतों और "द साइंस ऑफ मडलिंग थ्रू" के माध्यम से लोकप्रिय हुआ।
- इस सिद्धांत का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि नीति निर्माण में कौन-कौन से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या व्यक्तिगत कारक प्रभावी हैं।
- रॉबर्ट ए. डाल, जेम्स विल्सन, चार्ल्स ई. लिंडब्लोम, येहेजकेल ड्रोर, विंसेंट ओस्ट्रोम ने नीति निर्माण में विभिन्न बलों (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय) के आपसी महत्त्व को रेखांकित किया।
- इस समय राजनीति के संदर्भ ने लोक प्रशासन की चर्चा में विशेष महत्त्व प्राप्त किया।
  - ✓ राजनीति और प्रशासन के बीच संघर्ष को संकीर्ण और स्वार्थी बताते हुए, नए लेखकों ने प्रशासन को राजनीतिक सिद्धांत की समस्या के रूप में पहचाना।
  - ✓ यह मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में था।
- ड्वाइट वाल्डो, वॉलेस सायर, पीटर सेल्फ और अन्य ने प्रशासनिक लोक नीति की अवधारणा पर बल दिया।
  - ✓ उन्होंने यह विचार प्रसारित करने का प्रयास किया कि राजनीति प्रशासन का वातावरण है।
- वे प्रशासन को प्रासंगिकता, मूल्य, लोकतंत्र और परिवर्तन के संदर्भ में करना चाहते थे।
  - ✓ लोक प्रशासन की इस नई प्रवृत्ति को "नव लोक प्रशासन" (New Public Administration) कहा जाता है।
- इसमें कहा गया कि प्रशासन को राजनीति के दृष्टिकोण से अधिक ग्राहक उन्मुख और प्रभावी भूमिका निभानी चाहिए।
- यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोक प्रशासन की चर्चा न केवल विकसित देशों में, बल्कि तीसरी दुनिया के देशों में भी हो रही थी।
  - ✓ इसलिए वर्तमान प्रशासन में "विकास प्रशासन" शब्द का विशेष महत्त्व है।
- तीसरी दुनिया के देशों को तुलनात्मक लोक प्रशासन के माध्यम से अध्ययन में शामिल किया गया।
  - ✓ तुलनात्मक लोक प्रशासन का मुख्य उद्देश्य तीसरी दुनिया के देशों के लोक प्रशासन का अध्ययन करना और तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से सिद्धांत निर्माण करना है।
- विकास प्रशासन में मुख्य रूप से यह विचार किया जाता है कि राज्य योजना, नीति निर्माण, नीति कार्यान्वयन में कितनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है और सार्वजनिक कल्याण और सहयोग को प्रशासन में कितनी प्राथमिकता दी जा सकती है।
- एफ.डब्ल्यू. रिग्स, डोनाल्ड सी. स्टोन, जॉन डी. मॉन्टगोमरी, एडवर्ड वीडनर, फ्रेड्रिक सी. मोशेर और अन्य ने विकास प्रशासन पर महत्वपूर्ण शोध किया है।
- यह कहा जा सकता है कि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुए प्रशासन के विज्ञान की अवधारणा 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अधिक परिपक्व हो गई।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति का उपयोग करके प्रशासन और प्रबंधन के क्षेत्र में नई व्याख्याएँ और विश्लेषण विकसित किए गए हैं।

चरण 6: 1991 - वर्तमान

- तथाकथित "नव लोक प्रशासन" (NPA) आंदोलन, जिसने अमेरिका में अश्वेतों और नारीवादियों की उम्मीदों को प्रेरित किया था, सामाजिक रूप से वंचित वर्गों की अपेक्षाओं को पूरा करने में असफल साबित हुआ।
- वर्ष 1987 में बोस्टन वार्षिक सम्मेलन में यह तय किया गया कि वर्ष 1985 में मिनोब्रुक सम्मेलन II आयोजित किया जाएगा। इसका उद्देश्य लोक प्रशासन के भविष्य की सामान्य जांच करना और 1960 के दशक और 1980 के दशक में लोक प्रशासन में शामिल लोगों के मध्य महत्वपूर्ण भिन्नताओं को समझना था।
- वाटरगेट स्कैंडल ने सरकार के प्रति पहले से मौजूद अविश्वास को बढ़ा दिया और छात्रों को "न्यून सरकार" की सोच की ओर प्रेरित किया। इसने भ्रष्टाचार और नौकरशाही पर नियंत्रण कम करने के लिए कदम उठाने पर जोर दिया गया।
  - ✓ सकारात्मक राज्य की अवधारणा ने नियामक राज्य की अवधारणा का स्थान लिया।
- अधिक निजीकरण, अनुबंध देना, स्वैच्छिकता, और तीसरे पक्ष की सरकार जैसे विचार प्रचलित हुए।
- वर्ष1994 में कनाडा में कॉमन एसोसिएशन फॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट सम्मेलन में नव लोक प्रबंधन की नींव रखी गई।
- इसने उदारीकरण और वैश्वीकरण के कारण बदलती परिस्थितियों के अनुसार लोक प्रशासन को पुनः अनुकूलित करने का प्रयास किया।
  - ✓ जे.वी. ऑस्ट्रम के "कैल्कुलस ऑफ ए कॉन्सेप्ट" जैसे कार्यों में नव लोक प्रशासन के सैद्धांतिक पहलुओं को स्पष्ट रूप दिया गया।
- लोक प्रशासन का अध्ययन और व्यवहार ने पारंपरिक राजनीति-प्रशासन विभाजन से लेकर समकालीन नव लोक प्रबंधन तक कई परिवर्तनों से गुजरा है।
- कुछ बाधाओं के बावजूद, लोक प्रशासन प्रासंगिक रहा है।
  - ✓ वैश्विक दुनिया में प्रासंगिक बने रहने के लिए लोक प्रशासन को प्रशासन के बहुआयामी पहलुओं को समझने की आवश्यकता है।
  - ✓ इसे उन नए उपकरणों का उपयोग करना सीखना होगा जो उस समाज की संस्कृति और सोच को समझने में मदद करें जहाँ यह प्रभावी है।
  - ✓ यह वैश्वीकृत दुनिया में और भी अधिक आवश्यक हो गया है।

लोक प्रशासन में वर्तमान रुझान:

- वैश्वीकरण के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव न केवल लोगों के जीवन पर बल्कि सरकारी प्रणाली के प्रत्येक हिस्से पर प्रभाव डाल रहा है।
  - ✓ इस प्रगति के कारण वर्तमान समय में लोक प्रशासन में कई अवधारणाएँ विकसित हुई हैं।
- 1980 और 1990 के दशक में विकसित देशों के प्रशासनिक प्रणालियों में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए।
  - ✓ प्रशासन में पारंपरिक अनुशासनात्मक और पदानुक्रम आधारित प्रणाली से लचीले, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित प्रशासन की ओर बदलाव हुआ।
- स्वाभाविक रूप से, 1990 के दशक से लोक प्रशासन के अध्ययन में एक नई मानसिकता देखी जा सकती है।
  - ✓ प्रशासनिक गतिविधियों में परिवर्तन की यह दिशा प्रशासन के बौद्धिक अभ्यास में भी महसूस की गई।

लोक प्रशासन में इस नई प्रवृत्ति के मुख्य पहलू हैं:

- प्रबंधकीयता।
- नव लोक प्रबंधन।
- बाजार आधारित लोक प्रशासन।
- उद्यमशील सरकार।
- शासन, सुशासन और ई-गवर्नेंस।
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी।

लोक प्रशासन के सिद्धांत

शास्त्रीय विचारधारा का शास्त्रीय सिद्धांतों में योगदान

हेनरी फेयोल का योगदान

- हेनरी फेयोल के अनुसार, किसी भी व्यावसायिक संगठन की सभी गतिविधियों को छह मुख्य समूहों में विभाजित किया जा सकता है:
  - ✓ तकनीकी गतिविधियां – उत्पादन से संबंधित
  - ✓ व्यावसायिक गतिविधियां – खरीद, बिक्री या लेन-देन से संबंधित
  - ✓ वित्तीय गतिविधियां – पूंजी अर्थात वित्त की खोज और उसके उचित उपयोग से संबंधित
  - ✓ सुरक्षा गतिविधियां – संपत्तियों और कर्मियों की सुरक्षा से संबंधित
  - ✓ लेखागतिविधियां – व्यापार लेन-देन का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखने से संबंधित, जिसमें सांख्यिकी भी शामिल है।
  - ✓ प्रबंधकीय गतिविधियां – इसमें शामिल हैं: (POCCoC)
    - योजना बनाना
    - संगठन करना
    - आदेश देना
    - समन्वय करना
    - नियंत्रण करना

हेनरी फेयोल द्वारा सुझाए गए प्रबंधन के सामान्य सिद्धांत:

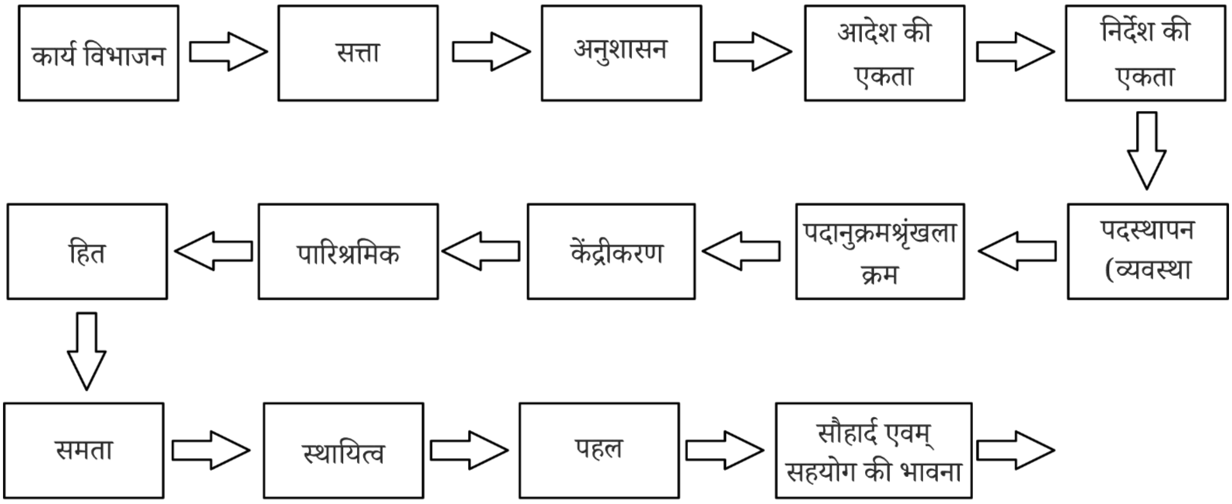

1. कार्य विभाजन

- यह अर्थशास्त्र का एक प्रसिद्ध सिद्धांत है, जिसे पारंपरिक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने प्रतिपादित किया था।
- इस सिद्धांत के उपयोग से समान मानव प्रयासों के साथ अधिक उत्पादन संभव है। ने इसे व्यावसायिक उद्यमों के प्रबंधन के संदर्भ में लागू किया।
- कार्य विभाजन से विशेषज्ञता आती है, जिससे मानव दक्षता में वृद्धि होती है। इस सिद्धांत के उपयोग से समान मानव प्रयासों के साथ अधिक उत्पादन संभव है।
- हेनरी फेयोलने इस सिद्धांत को संगठन के दोनों स्तरों – संचालनात्मक और प्रबंधकीय – पर लागू करने की सिफारिश की।

2. अधिकार और उत्तरदायित्व

- अधिकार प्रबंधकीय कार्य का प्रमुख तत्व है।
  - ✓ यह प्रबंधकीय पद में निहित शक्ति है, जो प्रबंधक को अधीनस्थों को उद्यम के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निर्देश देने में सक्षम बनाती है।
- उत्तरदायित्व सत्ता के विपरीत स्थिति को दर्शाता है, यह एक अधीनस्थ का अपने वरिष्ठ के प्रति कर्तव्य है (जिससे अधिकार प्राप्त हुआ है) कि वह उस कार्य को सही ढंग से पूरा करे जिसके लिए उसे अधिकार दिया गया है।

इस संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ इस प्रकार हैं:

- अधिकार और उत्तरदायित्व में से, अधिकार प्राथमिक है और उत्तरदायित्व द्वितीयक या सशर्त होता है।
  - ✓ उत्तरदायित्व, अधिकार का स्वाभाविक परिणाम है और यह स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं हो सकता।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि अत्यधिक अधिकार का दुरुपयोग न हो और उत्तरदायित्व को उचित और न्यायसंगत तरीके से तय किया जा सके, सही और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इसे अधिकार और उत्तरदायित्व की समानता का सिद्धांत कहते हैं।

3. अनुशासन

- इसका अर्थ है कि संगठन के नियमों का पालन करना, चाहे वह प्रबंधक हों या अधीनस्थ। इसमें अधीनस्थों द्वारा अपने वरिष्ठों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना भी शामिल है।
- अनुशासन किसी संगठन के सही संचालन, समृद्धि और विकास के लिए आवश्यक है।
- टिप्पणी:
  - ✓ अनुशासन के लिए अच्छे प्रबंधकों की आवश्यकता होती है।
  - ✓ वरिष्ठ तभी अनुशासन की अपेक्षा कर सकते हैं जब वे स्वयं अनुशासित हों।

4. आदेश की एकता

- इस सिद्धांत के अनुसार, एक अधीनस्थ को एक समय में केवल एक वरिष्ठ से आदेश और निर्देश प्राप्त होने चाहिए।
- इस सिद्धांत को लागू करने के स्पष्ट कारण हैं यथा:
  - ✓ अधीनस्थ के सामने आदेशों का पालन करने को लेकर भ्रम की स्थिति का अंत हो जाता है।
    - ■ यदि एक अधीनस्थ को एक से अधिक वरिष्ठ अधिकारी आदेश देंगे, तो वह हमेशा भ्रम की स्थिति में रहेगा।
  - ✓ वरिष्ठ द्वारा आदेश और निर्देश जारी करके अधीनस्थ पर उचित उत्तरदायित्व निर्धारित करना आसान हो जाता है।
    - ■ एक वरिष्ठ द्वारा उचित अधिकार और कार्य सुविधा निर्धारित अधीनस्थ को आदेश और निर्देश जारी करके स्पष्टीकरण मांग सकता है कि उसने काम ठीक से क्यों नहीं किया।

5. निर्देश की एकता

- निर्देश की एकता का अर्थ है कि समान उद्देश्य वाली गतिविधियों के लिए एक ही नेतृत्वकर्ता और एक ही योजनाहोनी चाहिए।
- यह सामूहिक सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यों की एकता सुनिश्चित करना आवश्यक है।
    - ✓ इस प्रकार,यह सिद्धांत प्रबंधन के लिए समन्वय स्थापित करने में मददगार है।

6. व्यक्तिगत हित का सामान्य हित की तुलना में अधीनता

- जब भी व्यक्तिगत और सामूहिक उद्देश्यों के बीच टकराव होता है, तो प्रबंधन को दोनों के बीच संतुलन बनाना चाहिए।
- यदि आवश्यकता पड़े तो व्यक्तिगत हितों को सामूहिक हितों के पक्ष में त्यागना चाहिए।

7. कर्मचारियों का पारिश्रमिक/प्रोत्साहन

- पारिश्रमिक वह मूल्य है जो कर्मचारियों और प्रबंधकों को उनके द्वारा संगठन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दी गई सेवाओं के बदले में दिया जाता है।
- चूंकि पारिश्रमिक/प्रोत्साहन का प्रश्न संगठन के सुचारू संचालन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, जो अच्छे या बुरे औद्योगिक संबंधों के लिए महत्वपूर्ण है।
    - ✓ फेयोल के अनुसार, पारिश्रमिक प्रणाली ऐसी होनी चाहिए, जो कर्मचारियों और नियोक्ताओं दोनों को संतुष्टि दे।

8. केंद्रीकरण

- यह केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के बीच संतुलन बनाने की एक प्रक्रिया है।
    - ✓ केंद्रीकरण का अर्थ है निर्णय लेने की शक्ति को शीर्ष स्तर पर निर्धारित करना।
    - ✓ विकेंद्रीकरण का अर्थ है निर्णय लेने की शक्ति को निम्न स्तर तक निर्धारित करना।
- इसलिए, प्रबंधन को केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के बीच उचित संतुलन स्थापित करना चाहिए।

9. पदानुक्रम

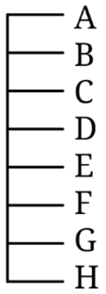

- यह वरिष्ठ अधिकारियों की श्रृंखला है, जो प्रशासन के शीर्ष स्तर से निम्न स्तर तक होती है।
    - ✓ इस श्रृंखला में प्रत्येक शीर्ष स्तर का अधिकारी अपने नीचे के स्तर के अधिकारी का वरिष्ठ होता है।
    - ✓ उदाहरण:
        - ■ B और C के बीच, B वरिष्ठ और C अधीनस्थ है।
        - ■ C और D के बीच, C वरिष्ठ और D अधीनस्थ है।
- पदानुक्रम के शीर्ष स्तर का अधिकारी संगठन के प्रबंधन का प्रतिनिधित्व करता है,(जैसे- A) जबकि निम्न स्तर का अधिकारी कनिष्ठ प्रबंधक होता है(जैसे- H)।

'गैंग प्लांक' की अवधारणा

- हेनरी फेयोल ने क्रम को बाधित किये बिना एक शॉर्टकट के रूप में पदानुक्रम का पालन करते हुए गैंग प्लांक की अवधारणा को निर्धारित किया । ऐसे सन्दर्भों में पदानुक्रम को दोहरे स्वरुप में दर्शाया जाता है।
- यहाँ एक गैंग प्लैंक को बिंदीदार रेखा द्वारा दर्शाया गया है, जो प्रत्यक्ष रूप से G को N से जोड़ती है।